संदर्भों के परिप्रेक्ष्य

डॉ. आर.डी. मिश्र

Scanned with OKEN Scanner

संदर्भों के परिप्रेक्ष्य

© लेखक

ISBN-81-903234-2-3

प्रथम संस्करण 2006

मूल्य - 225/-

प्रकाशक
अमन प्रकाशन
कीर्ति स्तंभ के पास, कटरा
सागर - 470002 (म.प्र.)
✆ 07582-403225

लेजर कम्पोजिंग
एक्टिव कम्प्यूटर्स
नमक मंडी, कटरा
सागर - 470002 (म.प्र.)
Mob. 9826434225

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रम

* हिन्दुत्व की अवधारणा 15
* साहित्य की राष्ट्रीय चेतना 22
* साहित्य में आधुनिकता, बोध 26
* लोक संस्कृति और बदलते आयाम 31
* समीक्षा और समाज 37
* साहित्य में मानववाद 42
* बात भारतीयता की 47
* योग की प्रासंगिकता 49
* आधुनिकता बोध और सांस्कृतिक एकरूपता की समस्या 53
* अधिकारों की संस्कृति और प्रेम का अधिकार 62
* संस्कृति की अवधारणा 65
* तुम हो महान् तुम सदा हो महान्! 69
* संस्कृति चेता निराला 74
* योग्य जन जीता है 78
* उतिष्ठत्, जाग्रत, प्राप्य वारान्नि बोधत्! 83
* अध्यात्म की प्रतीति और विवेकानंद 87
* सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम् 91
* यही भूमा का मधुमय दान 95
* युगद्दष्टा कृष्ण 99
* कर्म योगी कृष्ण 103
* समन्वय की संस्कृति और आस्था के आयाम 106
  (महावीर जयंती के अवसर पर दिए गए भाषण का संक्षेप)

Scanned with OKEN Scanner

❊ सामासिक संस्कृति की पृष्ठभूमि : कबीर और जायसी का संदर्भ 112
❊ बुन्देली धरती के जीवंत कवि पं. सुखराम चौबे 'गुणाकर' 116
❊ युग प्रवर्तक समीक्षक आचार्य नंद दुलारे वाजपेयी 121
❊ आचार्यत्व के जीते जागते स्वरूप पं. भगीरथ मिश्र 128
❊ अध्ययन : अध्यापन के जीवंत प्रतीक : डॉ. रामरतन भटनागर 133
❊ त्रिलोचन – 1 'दिगन्त' तक गूंजती 'शब्द ध्वनि' 138
❊ त्रिलोचन – 2 हंसा करो पुरातन बात 144

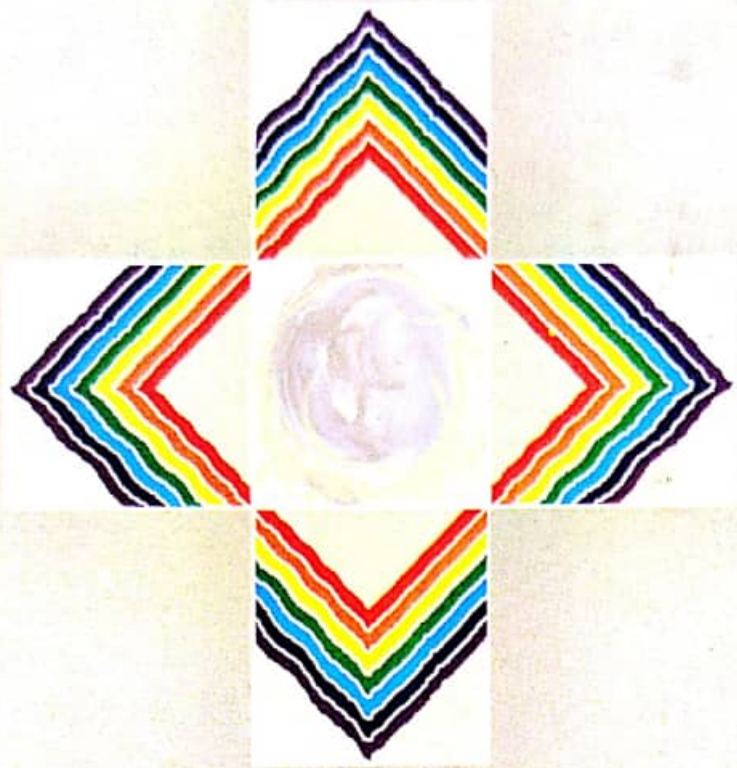

अमन प्रकाशन
कीर्ति स्तंभ के पास, कटरा, सागर (म.प्र.)
दूरभाष : (07582) 403225

Scanned with OKEN Scanner